स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन एवं नई शिक्षा नीति (NEP -2020) में उसकी प्रासंगिकता

सार-संक्षेप (synopsis)

पी० एच० डी० (दर्शनशास्त्र) शोध उपाधि पंजीयन के लिए प्रस्तुत

विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय ,दरभंगा

शोधार्थी

चन्दन कुमार साहु

ग्राम -रौतिनियाँ

पोस्ट-जगतपुर

थाना -फुलपरास

जिला -मधुबनी ,बिहार

पिन कोड -847402

मो०-9631795744

पर्यवेक्षक

डा.आदित्य कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक,दर्शनशास्त्र विभाग

भारती मंडन महाविद्यालय,रहिका,मधुबनी

ल .ना .मि.वि.की अंगीभूत इकाई

DR. ADITYA KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF PHILOSOPHY
B.M. COLLEGE, RAHIKA
MADHUBANI

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन एवं नई शिक्षा नीति (NEP -2020) में उसकी प्रासंगिकता

स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय

नवीन भारत के सांस्कृतिक ,धार्मिक ,आध्यात्मिक तथा सामाजिक गगन में स्वामी विवेकानन्द एक उज्ज्वल नक्षत्र है। उनके बताए गए शिक्षा ,सिद्धांत आज भी भारतीयों को नई दिशा दे रहा है।स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था। इनके जन्म दिवस 12 जनवरी को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है । उनके पिता विश्वनाथ दत्त, कलकत्ता के उच्च न्यायालय में एक वकील थे और उनकी माता भुवनेश्वरी देवी एक धार्मिक महिला थी । उसके ऊपर अपनी माता भुवनेश्वरी देवी का गहरी प्रभाव पड़ा था।विवेकानंद कई बार कहा था कि "मेरे ज्ञान के विकास के लिए मैं अपनी माँ का ऋणी हूँ"। 1881 में स्वामी रामकृष्ण परमहंस से उनकी भेट हुई और इस भेंट के फलस्वरुप उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया और उन्होंने परमहंस जी के प्रति आत्मसमर्पण किया। स्वामी विवेकानद ने श्री रामकृष्ण को मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया। रामकृष्ण परमहंस सुविख्यात साधक थे , उन्होंने भारतीय इतिहास में प्रथम व्यक्ति है जिन्होंने सभी धर्मो को सत्य बतला कर उनके बीच सामंजस्य स्थापित किया था। स्वामी रामकृष्ण ने विवेकानंद को अद्वैत वेदांत की शिक्षा उपनिषद से, सर्वकल्याण (सर्व मुक्ति)का सिद्वांत बौद्ध दर्शन से और मानव सेवा का भाव इसाई धर्म से लेकर दीक्षित किया जिसका प्रभाव उनके जीवन पर साफ-साफ दिखाई पड़ता है। 1886 में उनके गुरु परमहंस के मृत्यु के बाद उन्होंने प्रण किये कि मैं सारा जीवन अपने गुरु के शिक्षा के प्रचार में लगा दूंगा। उसके बाद उन्होंने सम्पूर्ण देश की यात्रा की। इस प्रकार देश की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त किया। उन्होंने देखा कि देश में गरीबी, निर्धनता तथा इनके कारण उत्पन्न सामाजिक बुराइयां एवं विषमता पुरे देश में व्याप्त है। इसीलिए उसे शिक्षा के माध्यम से सुधार करने का कोशिश की तथा गुरु से मिली शिक्षा को जन -जन तक पहुँचाने का निर्णय किया। उसी बीच उन्हें ज्ञात हुआ कि शिकागो में विश्व -धर्म -सम्मेलन (PARLIAMENT OF RELIGIONS)आयोजन होने वाली है। 'मैं वहाँ अवश्य जाऊँगा क्योंकि दरिद्र भारत की मुक्ति के साधन जुटाने के लिए मुझे विश्व -धर्म -सम्मेलन में भाग लेना चाहिए'। 1893 का वर्ष भारत के इतिहास में कौन भूल सकता है? उनके एक वाक्य 'अमेरिका के भाइयों और बहनों' ने उन्हें सबका प्रिय बना दिया। उन्होंने 'सार्वभौमिक धर्म' का परिचय दिया, जिसमे समस्त मानवता उसके अंतर्गत समा सकें। उन्होंने वेदांत दर्शन को एक नई दिशा प्रदान किया। उनके द्वारा वर्णित सिद्धांत को नव्य वेदांत के रूप में जाना जाता है। उन्होंने बौद्ध दर्शन का 'आत्म दीपो भवः' सिद्धांत का अपनी भाषा में वर्णन किये हैं कि मैं तुम्हे सहायता नहीं दे सकता। कोई भी मनुष्य तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता,

Scanned with CamScanner

अपनी सहायता स्वयं करो। प्रसिद्ध लेखक रामधारी सिंह दिनकर उनकी इस यात्रा की महत्व बताते हुए कहते है कि हिंदुत्व एवं भारत के लिए यह अच्छा हुआ कि स्वामी जी इस सम्मेलन में जा सके, क्योंकि इस सम्मेलन ने हिंदुत्व के पक्ष में ऐसा ऊंचा प्रचार हुआ जैसा न तो कभी पहले हुआ था, न उसके बाद से लेकर आजतक हो पाया है। वहां से वापस आनेपर स्वामी विवेकानंद जी ने कलकत्ता के निकट बेलूर में 'स्वामी रामकृष्ण आश्रम' की स्थापना की तथा इस आश्रम के माध्यम से जनकल्याण, सेवा तथा सामाजिक सुधार का कार्य प्रारम्भ किये। उनका महाप्रयाण 04 जुलाई 1902 को हो गया।

दर्शन : स्वामी विवेकानंद के विचारों पर वेदांत दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है। वे वेदांत के विचारों को समय के अनुरूप कुछ परिवर्तन करके प्रस्तुत किये हैं । स्वामी जी का विचार बौद्ध धर्म के बोधिसत्व, सर्वमुक्ति से भी प्रभावित है। इसलिए उन्होंने सेवा कार्य को मुख्य माने हैं और उन्होंने कहते है कि जन -जन का सेवा ही नारायण सेवा है। उन्होंने मानव हृदय में प्रेमभाव का संचार और मानव सेवा का सन्देश देते हैं। उनके सिद्धांत के अनुसार ब्रहम ही अंतिम सत्य है। ब्रहम सृष्टि का निमित्त एवं उपादान कारण दोनों है और वह ब्रहम निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। यह वस्तुजगत ब्रहम की माया शक्ति के द्वारा सृजित है स्वामी जी माया और जगत को भी सत्य मानते है क्योंकि सत्य बहय से सत्य की ही उत्पति हो सकती है । मनुष्य में निहित आत्मा को ब्रहम का अंश मानते हुए उन्होंने मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मुक्ति को माना है। सम्पूर्ण विश्व में एक ही चेतन सत्ता व्याप्त है। उनके अनुसार आत्मा शाश्वत और सर्वव्यापी है। हम सब उसकी अभिव्यक्ति है। शरीर नश्वर है पर आत्मा अमर है। ज्ञान, भक्ति,कर्म और योग के द्वारा मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षा दर्शन :-शिक्षा वह ज्योति है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रो में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। 'शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास का नाम है'। सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और यदि इनके आलावा विकास के किसी अन्य पहलू का पता लगे तो उसका भी विकास सम्मिलित है। समाज की चतुर्मखी उन्नति तथा सभ्यता की बहुमुखी प्रगति शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। भारतीय मनीषियों ने सुगठित शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया है। इस सुगठित शिक्षा प्रणाली के द्वारा ही विशाल वैदिक साहित्य संरक्षित रह सका । स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के व्यापक व व्यावहारिक दोनों अर्थ को स्वीकार किया । उन्होंने जीवन का अंतिम लक्ष्य आत्मानुभूति, ईश्वर की प्राप्ति एवं मुक्ति प्राप्त करना माना। उन्होंने ब्रहम तथा वस्तुजगत दोनों को सत्य मानते थे । उन्होंने शिक्षा द्वारा लौकिक व पारलौकिक दोनों जीवन के लिए मनुष्य को तैयार करने की बात कही। वे मानते थे कि जबतक हम भौतिक दृष्टि से सुखी व सम्पन्न नहीं होते, तबतक ज्ञान, कर्म,

Scanned with CamScanner

भक्ति और योग, ये सब कल्पना की वस्तु है। लौकिक दृष्टि के अनुसार शिक्षा वह है जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े ,बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलंबी बने। पारलौकिक दृष्टि से उन्होंने आत्मानुभूति की बात कही। शिक्षा मनुष्य में पहले से उपस्थित पूर्णता की अभिव्यक्ति है अर्थात 'मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है'।

उनके अनुसार ज्ञान मनुष्य में स्वतः सिद्ध है । कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता, सब अंदर ही है। मनुष्य जो कुछ भी सीखता है, वह वास्तव में आविष्कार करना ही है। अर्थात मनुष्य की अपनी अनंत ज्ञान स्वरूप आत्मा के ऊपर से आवरण को हटा लेना। मानव जीवन अपने आप में अपार संभावनाएं समाहित किये हुए है। हम उसे किसी एक दिशा में नहीं मोड़ सकते हैं। शिक्षाशास्त्री भी जब शिक्षा की समस्याओं का हल ढूढ़ते है तो उन्हें सबसे पहले शिक्षा के उदेश्यों पर विचार करना होता है और चूँकि शिक्षा के उद्देश्य प्रायः वही होते है जो दर्शन निश्चित करता है। इसलिए शिक्षाशास्त्री को भी सबसे पहले दर्शन पर निर्भर करना पड़ता है। जब शिक्षाशास्त्री शैक्षिक समस्याओं के प्रति जागरूक होते है और उनके समाधान के लिए दर्शन का सहारा लेते हैं तो शिक्षा दर्शन का उदय होता है। स्पष्ट है कि दर्शन, शिक्षा का वह भाग, जिसमें शिक्षा कि समस्याओं का अध्ययन किया जाता है और उन समस्याओं का हल प्रस्तुत किया जाता है। यह शिक्षा - दर्शन कहलाता है। शिक्षा दर्शन में इन उद्देश्यों एवं साधनों की व्याख्या होती है। इसके साथ -साथ इसमें यथा उद्देश्यों कि प्राप्ति के लिए शिक्षा प्रकिया के स्वरूप पर भी विचार किया जाता है। पाश्चात्य विद्वान हेन्डरसन महोदय के शब्दों में 'शिक्षा - दर्शन शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग है'।

नई शिक्षा नीति (NEP -2020) :नई शिक्षा नीति 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मंजूरी मिलने के बाद लागु किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य इंडिया में EDUCATION को ग्लोबल स्तर पर लाना है जिससे इंडिया महाशक्ति बन सके। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को उत्तम नागरिक बनाना है। जो हमें जाति, धर्म , क्षेत्र से ऊपर उठाकर समाज की बेहतरी के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करे और वैज्ञानिकता सोच विकसित करे। इस शिक्षा नीति में वर्तमान की आवश्यकताओं के साथ - साथ आधुनिक विज्ञान को साथ लेकर चलने का भी प्रावधान रखा गया है; जैसे की विज्ञान प्रौद्योगिकी के साथ सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति और समस्याओं को भी हल करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा से वंचित बच्चों को भी ऑनलाइन ओपन कार्यक्रम 'स्वयं' और 'वैश्विक अकादमिक नेटवर्क पहल' के द्वारा शिक्षा के मुख्य धारा में शामिल करने का प्रयास किया गया है। भारतीय परम्पराएं, समस्याएं, मानवीय मूल्यों, सिद्धांतो की ओर भी इस नई शिक्षा नीति में ध्यान आकर्षित कर उन्हें पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया है। स्कूल

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रमों में मानवीय मूल्यों को रखकर नैतिकता में सुधार तो होगा ही, नैतिक मूल्यों की भी रक्षा हो सकेगी। इस सिस्टम को 10 + 2 से बदलकर 5+3+3+4 कर दिया गया है। इससे उसे 5 कक्षा बुनियादी शिक्षा जिसमे नर्सरी, एलकेजी, यूकेजी , फर्स्ट एण्ड सेकण्ड क्लास तक मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान रखा गया है। मिडिल स्टेज कक्षा 6 से 8 तक तथा सकेंडरी स्टेज कक्षा 9 से 12 तक बांटा गया है। शिक्षा में समानता को लाने के लिए एक बहुत बड़ी पहल इस नीति में की गई है। मिशन नालंदा एवं मिशन तक्षशिला दो ऐसे प्रोजेक्ट है जो ग्रामीण व वंचित वर्ग के लिए होंगे। यह शिक्षा उन्हें रचनात्मक तरीके से दी जानी चाहिए और जैसे कि विधार्थी खेलते हुए ग्रहण कर सकें। कक्षा 9 में विषय वस्तु का बोझ कम करने का, अधिक पूर्ण विश्लेषण और तार्किक चिंतन को बढ़वा देने की कोशिश की गई है जिसपर स्वामी विवेकानंद काफी जोर दिया करते थे। उनके अनुसार मनुष्य का बौद्धिक विकास के साथ- साथ सामाजिक विकास भी जरूरी है। स्वामी जी छात्रों में वैज्ञानिक सोच, सृजनात्मकता, सामाजिक समस्याओं का समाधान करने की क्षमता व जागरूकता, तार्किक चिंतन, विभिन्न प्रकार के कौशल, हुनर विकसित करना भी चाहते थे जिसमे हमारा समाज एक विकास के रास्ते पर जा सके और उन्होंने भारत को एक महाशक्ति के रूप में देखना चाहते थे। इस शिक्षा नीति के द्वारा बच्चों में नैतिक मूल्यों की रक्षा करना व भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना होगा और शिक्षा में हो रही असमानताएं जो राष्ट्रीय एकता में एक प्रमुख बाधक सिद्ध होता है ,उसको समाप्त करना होगा।

उद्देश्य(OBJECTIVE)

इस शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा नीति 2020 में सन्निहित स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता को दर्शाना है। इस शिक्षा नीति के प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा करने के साथ -साथ विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का क्या प्रभाव पड़ा है इस पर विस्तार रूप से उपस्थापित करना इस शोध प्रबंध का मुख्य ध्येय है। इसके कुछ प्रमुख विंदुओं पर निम्न में चर्चा किया जा रहा है।

1.नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, शिक्षा में नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ विद्यार्थियों को नैतिक एवं चरित्रवान बनाना है जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली और विद्यार्थी वैश्विक प्रति स्पर्धा के योग्य बने।

2.स्वामी जी के अनुसार भारतीय युवा केवल रोजगार सक्षम होना पर्याप्त नहीं है अपितु नैतिक मानदंडों का अनुपालन, शुद्ध विचार एवं चरित्रवान होना आवश्यक है जिसको नई शिक्षा नीति में जोर दिया गया है।

Scanned with CamScanner

3 अन्तरस्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में VALUE ADDED COURSES को सम्मिलित किया गया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा प्रदान किया जा रहा है। इस शिक्षा नीति का लक्ष्य ऐसी शिक्षा प्रणाली को विकसित करना है जिसमे भारतीय परम्पराओं और मूल्यों को जगह मिले। सरकार इस शिक्षा नीति के माध्यम से प्रयासरत है कि तेजी से बदलते सामाजिक, आर्थिक, वैश्विक परिवेश में देश के युवाओ को सक्षम में बनाया जाय।

4.इस शिक्षा नीति के तहत कक्षा पाँच तक की शिक्षा में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को अपनाने और आगे की शिक्षा में मातृभाषा भाषा को प्राथमिकता देने की बात कही गई है जो कि स्वामी जी के विचारों के अनुरूप है।

5.अन्ततोगत्वा इस शोध का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा नीति में वर्णित उन विशेषताओं पर प्रकाश डालना है जो विवेकानंद के शिक्षा दर्शन से प्रेरित या प्रभावित हुआ है।

परिकल्पना (hypothesis)

यह शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों के आधार पर प्रस्तुत होना है ।

1.प्राथमिक स्रोत- विवेकानंद ग्रंथावली और उनसे सम्बन्धित अन्य ग्रन्थ, नई शिक्षा नीति 2020 के मूल पाठ, जो भारत सरकार द्वारा जारी किया गया है।

2. दवितीयक स्रोत- विवेकानंद के कार्यो के महत्वपूर्ण अध्ययन, शोध प्रबंध, शोध पत्र, नई शिक्षा नीति 2020 पर संदर्भपुस्तकों सहित विकिपीडिया और अन्य बेबसाइटे सम्मिलित है। इस दो स्त्रोतों के आधार पर हम शोध के निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं।

शोध विधि(RESEARCH METHOD)

1 विश्लेषणात्मक :-इस विधि के द्वारा हमें एक-एक सिद्धांत को समझने के लिए काफी सहयोग होगी।

2 तुलनात्मक :-इस विधि के द्वारा ही विभिन्न पक्षों की तुलना की जा सकेगी ताकि निष्कर्ष तक पहुँचा जा सके।

3 स्वाध्याय विधि :-किसी भी विषय के पूर्ण ज्ञान के लिए उससे सम्बंधित प्रामाणिक ग्रंथो को स्वंय पढ़ना और स्वयं समझने का प्रयत्न करना ही स्वाध्याय विधि है। इस विधि का शिक्षा दर्शन में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

4 तर्क एवं विचार विमर्श विधि :-इस विधि का प्रयोग किसी भी तथ्यों का तार्किक उत्तर प्राप्त करने, अपनी शंकाओ को बार -बार उठाने और उनका समाधान के लिए किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अध्यायीकरण (chapterisation)

प्रथम अध्याय (a):- भूमिका

द्वितीय अध्याय(b):- स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन

तृतीय अध्याय(c) :-नई शिक्षा नीति 2020

चतुर्थ अध्याय(d):- स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का नई शिक्षा नीति में योगदान

पंचम अध्याय (e):- निष्कर्ष

सन्दर्भसूची (Bibliography)

1.शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि -लक्ष्मीलाल के. ओड़

2.विश्व के महान शिक्षा शास्त्री -राम बाबू गुप्त

3.स्वामी विवेकानंद द लिविंग वेदांत - बद्रीनाथ चतुर्वेदी

4.फिलॉसफी ऑफ़ एजुकेशन -एस.एस चंद्रा एवं राजेंद्र के. शर्मा

5.शिक्षा दर्शन - सीताराम चतुर्वेदी

6.स्वामी विवेकानंद हिज लाइफ एंड लेगेसी- तपस्यानंद स्वामी

7.संस्कृति के चार अध्याय-रामधारी सिंह दिनकर

8.विवेकानंद :ए बायोग्राफी -स्वामी निखिलानंद

9.स्वामी विवेकानंदः व्यक्तित्व का विकास -स्वामी ब्रह्मस्थानन्द

10.एसेंशियल्स ऑफ़ इंडियन फिलॉसफी- एम. हीरियन्ना

11.विवेकानंद :नया भारत गढ़ो-स्वामी ब्रह्मस्थानन्द

12.शिक्षा के दार्शनिक आधार -आर.आर रस्क

13.दि फिलॉसफी ऑफ़ एजुकेशनल थ्योरी -एच.एच. हार्न

Scanned with CamScanner